बी. ए. पार्ट I

01.06.20

हिन्दी रचना

डा. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज,

सुमित्रानंदन पंत (कवि परिचय)

सुमित्रानंदन पंत छायावादी कविता के प्रमुख स्तंभ थे। इनका जन्म सन् 1900 ई० में अल्मोड़ा के निकट कौसानी गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगादत्त पंत था। वे एक ख्याति प्राप्त जमींन्दार थे। पंत जी को बचपन में ही माह के स्नेह से वंचित होना पड़ा। इनकी माता का नाम सरस्वती देवी था। पंत जी के जन्म लेने के कुछ घंटे बाद ही इनकी माता का निधन हो गया। माँ की मृत्यु के बाद इनका लालन-पालन इनकी दादी एवं पिता के द्वारा हुआ। पंत जी बचपन से ही शांत और गंभीर स्वभाव के थे।

पंत जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही पाठशाला में हुई। जब वे मात्र सात वर्ष के थे तब इनका दाखिला गाँव के स्कूल में ही हुआ। तदुपरान्त 1911 ई० में वे गवर्नमेंट हाई स्कूल अल्मोड़ा में पढ़ने गए। गुरु ने इनका नाम गोसाईं दत्त था जिसे बाद में बदलकर सुमित्रा नंदन कर दिया गया। उन्होंने दसवीं कक्षा की पढ़ाई जयनारायण स्कूल, काशी में की। पढ़ाई के दौरान ही वे गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित हो गए। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। इसी बीच उन्होंने अंग्रेजी भाषा का गहन अध्ययन किया। साथ ही, वेद, उपनिषद का ज्ञान प्राप्त किया। स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परम हंस, और महर्षि अरविन्द का इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गहन अध्ययन एवं चिन्तन के कारण इनकी प्रतिभा अच्छी विकसित हो चुकी थी, तब इनका रुझान काव्य लेखन की ओर हो गया। सन् 1957 ई० में वे ऑल इंडिया रेडियो के साहित्यकार सलाहकार रहे सन 1961 ई० में भारत सरकार की ओर से उन्हें पद्म भूषण की उपाधि मिली। वे आजीवन साहित्य साधना में रत रहें। इनकी मृत्यु सन् 1977 ई० में हुई।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

पंतजी सर्वथा जागरूक कवि थे। उन्होंने कभी एक 'वाद' से जुड़कर नहीं रहे। यही कारण है कि उनके काव्य के विभिन्न चरणों में परिवर्तन देखने को मिलते हैं। वे छायावाद के अप्रतिम गायक थे। छायावादी कवियों की प्रकृति के प्रति जितनी गहरी जिज्ञासा, एवं उदात्त भावनाएँ हैं वे पंतजी कविताओं में दिखलाई पड़ती है। उनमें मानव जीवन के प्रति एक किशोर जिज्ञासा थी, यही उनके काव्य में रहस्यवाद को जन्म देता है। 'वीणा' काव्य में उनकी कविताएँ प्रेम के उल्लास एवं प्रकृति प्रेम से भरी हुई है। 'पल्लव' में आकर उनकी कविताएँ सौंदर्यमयी बन गईं। उन्होंने साठ के दशक के आस-पास प्रगतिवादी काव्य का दामन पकड़ा। तब उनकी कविता में श्रमिकों के दर्द एवं पूँजीवादी दमन एवं शोषण का रूप दिखलाई पड़ता है। इस प्रकार पंत जी की कविताओं में हमें निरंतर उनके विकसित रूप दिखलाई पड़ते हैं। बाद में चलकर पंत जी आध्यात्म की तरफ मुड़ गए। उनके जीवन में महर्षि अरविन्द का पूर्ण प्रभाव हो गया। उन्होंने प्रतीकों के माध्यम से अपनी चेतना की अभिव्यक्ति की। वे संपूर्ण विश्व की संस्कृति को मानवता के पक्ष में लीन कर लेना चाहते थे। उन्होंने समाज में न केवल मानवतावाद की स्थापना की साथ-साथ चेतना और आदर्श का समन्वय स्थापित करना चाहा। उनकी कविताओं में वेद और उपनिषद् का भी गहरा असर है।

पंतजी प्रकृति के सुकुमार कवि थे। वे सच्चे रूप में एक कोमल हृदय के कलाकार थे। शब्दों की आत्मा का उन्हें सूक्ष्मतर ज्ञान था। उनकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली हिन्दी थी। इस भाषा को कांतिमय बनाने में उनका विशेष योगदान है। उनकी प्रमुख रचनाओं में, 'वीणा, पल्लव, युगवाणी, युगांत, ग्राम्या, उत्तरा और चिदम्बरा' है। 'चिदम्बरा' काव्य पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला। उन्होंने कई कहानियाँ और निबंधों की भी रचना की। इस तरह से वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। □□

Scanned with CamScanner